श्री ब्रह्म संहिता स्तोत्रम्

Sri Brahma Samhita by Bhaktivedanta book Trust gives Sanskrit to English translation by **His Divine Grace Bhaktisiddhanta Sarasvati Goswami Thakur**. Here, Suresh 'Vyas' has translated the *stotra* from English to Gujarati with his limited ability. Hope you would sing this every day.

चिन्तामणि प्रकर सद्मसु कल्पवृक्ष
लक्षावृतेषु सुरभीर् अभिपालयन्तम्।
लक्ष्मी सहस्त्र शत सम्भ्रम सेव्यमानम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥२९॥

दिव्य मणीओथी बनेला अने कल्पवृक्षोथी छवायेला पोताना धाममां दिव्यानन्द आपती सुरभी गायो जे चरावे छे, लाख्खो लक्ष्मीओ खूब मान अने प्रेम भावथी जेनी हंमेश सतत सेवा करी रही छे, ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

वेणुम् क्वणन्तम् अरविन्द दलायताक्षम्
बर्हावतम्सम् असिताम्बुद सुन्दरांगम्।
कन्दर्प कोटि कमनीय विशेष शोभम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३०॥

पोतानी वांसळी वगाडवमां जे कुशळ छे, खीलता कमळनी पांखडीओ जेवी जेनी आंखो छे, माथे मोरपिच्छ शोभे छे, वादळी रंगनी झांयवाळुं सुंदर जेनुं शरीर छे, जेनु अद्भूत मनोहर रूप करोडो कामदेवोने मोहित करे छे, ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

आलोल चन्द्रक लसत् वनमाल्य वंशी
रत्नांगदम् प्रणय केलि कला विलासम्।
श्यामम् त्रिभंग ललितम् नियत प्रकाशम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३१॥

चन्द्र लोकेटथी शोभतो फूलहार जेनी डोक फरते झूले छे, वांसळी अने रत्नजडित आभूशणोथी जेना बे हाथ शणगारेला छे, (दिव्य) प्रेमलिलाओमां जे हंमेश मस्त छे, जेनु छटादार त्रिभंग श्यामसुन्दर स्वरूप सनातन रीते प्रगट छे, ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

अंगानि यस्य सकलेन्द्रिय वृति मंति
पश्यंति पांति कलयंति चिरम् जगंति ।
आनंद चिन्मय सदुज् ज्वल विग्रहस्य
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३२॥

तेनु इन्द्रियातीत रूप पममानन्द, सत्य, अने भौतिकताथी अने तेथी सौथी वधु झळहळती भव्यताथी भरपूर छे। ए इन्द्रियातीत आकारनु दरेक अंग बीजा बधाय अंगोनु काम पूरी रीते करी शके छे अने आध्यत्मिक अने भौतिक बन्ने प्रकारना अनंत विश्वोने सदाकाळ जुवे छे, सर्जे छे, अने जाळवे छे। ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

अद्वैतम् अच्युतम् अनादिम् अनन्त रूपम्
आद्यम् पुराणपुरुषम् नवयौवनम् च ।
वेदेषु दुर्लभम् अदुर्लभम् आत्म भक्तौ
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३३॥

जे वेदोथी पहोंचवा शक्य नथी पण शुद्ध अने एकनिष्ठ भक्तिथी आत्मा जेने मेळवी शके छे, जेना जेवा बीजा कोइ नथी; जे अक्षय छे, अनादि छे अने सनातन पुरूष छे छतां नवयुवाननी कान्ति वाळा व्यक्ति छे, ते आदिपुरूश गोविन्दने हुं भजुं छुं।

पन्थास्तु कोटि शत वत्सर सम्प्रगम्यो
वायोर् अथापि मनसो मुनि पुंगवानाम्।
सः अपि अस्ति यत् प्रपद सीम्नि अविचिंत्य तत्वे
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३४॥

करोडो वर्षो श्वास रुंधी प्राणायम करीने अध्यात्मनी साधना करता योगीओ अथवा भौतिक मायाथी छुटवा प्रयास करीने अद्वैत ब्रह्मनी शोध करता ज्ञानीओ जेना अंगुठाना मात्र अग्र भाग सुधीज पहोंची शके छे, ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

एकः अपि असौ रचयितुम् जगदन्ड कोटिम्
यत् शक्ति अस्ति जगदन्ड चया यत् अंतः।
अण्डांतर स्थ परमाणु चयांतर स्थम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३५॥

ते पुरूश अभेद्य छे कारणके ते अने तेनी शक्तिओमां कोइ भेद नथी। करोडो विश्वो सर्जवाना तेना काममा तेनी शक्ति तेनाथी कदी छूटी पडती नथी। बधाय विश्वो तेनी अन्दर छे अने तेज समये ते पूर्णरीते विश्वोना दरेक अणुओमां हाजर छे। एवा ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यद् भाव भावित धियो मनुजास् तथैव
संप्राप्य रूप महिमासन यानभूषाः
सूकृतैर् यमेव निगम प्रथितैः स्तुवन्ति
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३६॥

भक्तिभावथी बिभोर बनेला भक्तो पोताने योग्य सुन्दरता, महानता, राजगादी, वाहन अने आभुशणो मेळवीने वेदना मंत्रसुक्तो वडे जेना गुणगान स्तुतिओ करेछे ते ज आदिपरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

आनन्द चिन्मय रसप्रतिभा विताभिस्
ताभिर्य एव निज रूपतया कलाभिः।
गोलोक एव निवसति अखिलात्म भूतो
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३७॥

जे पोताना धाम गोलोकमा पोताना आध्यात्मिक रूपने मळता रूपना चोंसठ कळाओथी युक्त परमानंद शक्तिनी मूर्ति स्वरूप राधाजी ने तेमना शरीरना विस्तृत मूर्तिमान रुपनी अने ते पुरूषना नित्य पुमानंदमय आध्यात्मिक रासथी संतृप्त अने शक्तिमान बनेली सखीओ साथे रहेछे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

प्रेमान्जन च्छुरित भक्ति विलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरम् अचिन्त्य गुण स्वरूपम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३८॥

जे अचिंत्य असंख्य गुणधर्मोवाळा श्यामसुंदर कृष्ण पोतेज छे, जेने शुद्ध भक्तो प्रेमरूप आंजणथी आंजेली भक्ति रूपी आंखो वडे पोताना हृदयना हृदयमां जुवे छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

रामादि मूर्तिषु कला नियमेन तिष्ठन्
नानावतारम् अकरोद् भुवनेषु किन्तु।
कृष्णः स्वयं समभवत् परमः पुमान् यो
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥३९॥

जे आ दुनियामां पोतेज कृष्ण तरीके आव्या अने राम, नृसिंह, वामन, वगेरे पोताना जुदा जुदा वस्तुलक्षी विभागोथी आव्या ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्द कोटि
कोटिष्व शेष वसुधादि विभूति भिन्नम्।
तद् ब्रह्म निष्कलम् अनंतम् अशेष भूतं
गोविन्दम् आदि पुरूषम् तम् अहम् भजामि ॥४०॥

जेनु तेज उपनिषदोमां सुचवेला अविभागीय ब्रह्म, के जे भौतिक जगतना अनंत यशोथी अलग होइ अछेद्य, अनंत, बेहद, अने सत्य भासे छे, तेनु उद्गम स्थान छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

माया हि यस्य जगदण्ड शतानि सूते
त्रैगुण्य तद् विषय वेद वितायमाना।
सत्वावलम्बि पर सत्वं विशुद्ध सत्वं
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४१॥

जे निरपेक्ष सत्य सिद्धांत छे, सर्व हयातीना आधार रूप मूळ तत्व छे, जेनी बाह्य शक्ति प्रकतिना त्रण गुणो - सत्व, रजस्, अने तमस - छे, जे भौतिक जगत विषेना वेद ज्ञानने चोतरफ फेलावे छे, ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

आनन्द चिन्यम रसात्मतया मनःसु
यः प्राणिनां प्रतिफलं स्मरतां उपेत्य।
लीलायितेन भुवनानि जगति अजस् रम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४२॥

जेनी कीर्ति कायम विजय उल्लासथी भौतिक जगतमां तेनी पोतानी लिलाओ वडे सर्वोपरि छे, के जे लिलाओ स्मरण करता जीवत्माओना मनमां कायम परमानंदनी अनुभूति आपता रासना आध्यात्मिक तत्व तरीके प्रतिबिम्बित थई रही छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

गोलोक नाम्नि निज धाम्नि तले च तस्य
देवि महेश हरि धामसु तेषु तेषु ।
ते ते प्रभाव निचया विहिताश्च येन
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४३॥

देविधाम, आ भौतिक जगत, सौथी निचे आवेलुं छे। तेनी उपर महेशधाम छे। तेनी उपर हरिधाम आवेलुं छे। अने ते बधानी उपर कृष्णनु गोलोक नामनु पोतानु धाम आवेलुं छे। जेणे आ बधा निचला धमोनु राज्य चलाववा सत्तधीशो निम्या छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

सृस्टि स्थिति प्रलय साधन शक्तिरेका
छायेव यस्य भुवनानि बिभर्ति दुर्गा।
इछानुरूपं अपि यस्य च चेष्टते सा
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४४॥

जेनी बाह्य शक्ति माया चित् शक्तिना प्रतिबिम्बनो स्वभाव छे। ते मायाने बधाय लोको दुर्गा तरीके भजे छे के जे दुर्गा आ भौतिक जगतनु सर्जन, भरणपोशण, अने विनाश करे छे। जेनी ईच्छा अनुसार आ दुर्गा पोतानु आचरण करेछे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

क्षीरं यथा दधि विकार विशेष योगात्
संजायते न हि ततः पृथगास्ति हेतोः।
यः शंभुताम् अपि तथा समुपैति कार्याद्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४५॥

जेवी रीते तेजबनी असरने लीधे दूधनु परिवर्तन दहींमा थायछे पण तोय दहींनी असर तेना कारण दूधना जेवी पण नथी अने दूधथी अलग पण नथी तेवी रीते जेनु परिवर्तन विनाश कार्य करवा माटे शंभुमा थयेलुं छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

दीपार्चिर् एव हि दशान्तरं अभ्युपेत्य
दीपायते विवृत हेतु समान धर्मा।
यस् तादृग् एव हि च विष्णुतया विभाति
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४६॥

एक मीणबत्ति बीजीने ज्वाळा आपेछे। बन्ने मीणबत्तिओ अलग अलग बळे छे छतां बन्नेना प्रकाशनो गुण एकज छे। ते ज प्रमाणे जे पोताने पोताना जुदा जुदा प्रागट्यमां सरखी रीते प्रदर्शीत करेछे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यः कारणार्णव जले भजति स्म योग
निन्द्राम् अनंत जगदण्ड स रोम कूपः।
आधार शक्तिम् अवलम्ब्य परां स्वमूर्तिम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४७॥

जे तेनु पोतानु महान वस्तुलक्षी रूप धारण करीने बधी सगवड आपती शक्तिओथी चिक्कार शेषनु नाम धारण करीने कारणोदकशायी समुद्रमा विश्रान्ति करे छे अने योगनिंद्रा, रचनात्मक निंद्रा, माणे छे त्यारे जेना रोमछीद्रोमां असंख्य विश्वो छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यस्यैक निश्वसित कालं अथावलम्ब्य
जीवन्ति लोम विलजा जगदण्ड नाथाः।
विष्णुर्महान् स इह यस्य कला विशेषो
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४८॥

आ महाविष्णुना रोमछीद्रोमांथी जे भौतिक जगतो प्रगट थाय छे तेना ब्रह्मा अने अन्य देवताओ महाविष्णुना एक उच्छवास सुधी जीवे छे। आ महाविष्णु जेनु वस्तुलक्षी व्यक्तित्व छे अने भागनो पण भाग छे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

भास्वान् यथाश्म शकलेषु निजेषु तेजः
स्वीयं कियत् प्रकटयति अपि तद्वदत्र।
ब्रह्मा य एष जगदण्ड विधान कर्ता
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥४९॥

जेम सूर्यकान्त नामना तेजस्वी रत्नोमां सूर्य पोताना प्रकाशनो थोडो भाग प्रगट करेछे तेम पोतामांथी छुटा पडेला वस्तुलक्षी विभाग ब्रह्माने भौतिक जगतनु नियमन करवा जे थोडी शक्ति आपे छे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यत् पाद पल्लव युगं विनिधाय कुम्भ
द्वन्दे प्रणाम समये स गणाधिराजः।
विघ्नान् विहन्तुम् अलं अस्य जगत् त्रयस्य
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥५०॥

जेना चरणकमळोने गणेशजीए त्रणेय लोकना प्रगतिना पन्थो परना विघ्नो नाश करवानी शक्ति मेळववा पोताना मस्तकना कुम्भद्वन्दो पर कायम धरी राख्या छे ते आदिपुरूष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

अग्निर्महीं गगनम् अम्बु मरुद् दिशश् च
कालस् तथात्म मनसीति जगत् त्रयाणि।
यस्माद् भवन्ति विभवन्ति विशान्ति यं च
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥५१॥

त्रणेय लोक अग्नि, पृथ्वी, आकाश, पाणी, हवा, दिशाओ, काळ, आत्मा, अने मन, एम नव तत्वोना बनेला छे। ते नव तत्वो जेमांथी उद्भवे छे, जेमां रहे छे, अने विश्वना प्रलय वखते जेमां समाई जाय छे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यच् चक्षुर् एष सविता सकल ग्रहाणाम्
राजा समस्त सुर मूर्तिर् अशेष तेजाः।
यस्याज्ञा भ्रमति सम्भृत काल चक्रो
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥५२॥

सूर्य सर्व ग्रहोनो राजा छे, अनंत तेजथी भरपूर छे, सारा आत्मानुं प्रतिबिम्ब छे, अने आ जगतनी आंख छे। जेनी आज्ञाथी आ सूर्य काळचक्र पर बिराजी पोतानी यात्रा करेछे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

धर्मः अथ पाप निचयः श्रुतयस् तपांसि
ब्रह्मादि कीट पतगा वधयश् च जीवा।
यद् दत्त मात्र विभव प्रकट प्रभावा
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥५३॥

ब्रह्माथी मांडीने नानामा नाना जीवडा सुधीमां हयात जणाती प्रगट शक्तिओ, अने बधा पुन्यो, बधा पापो, वेदो, अने

तपोमांनी शक्तिओ जेणे आपेली शक्तिथी जळवाय छे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यस् तु इन्द्रगोपम् अथवेन्द्रम् अहो स्वकर्म
बन्धानुरूप फल भाजनम् आतनोति।
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्ति भाजाम्
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥५४॥

भक्तिना रंगमां तरबोळ लोकोना कर्मबंधनोने जे मूळ सहित बाळी नाखे छे, अने हालना अने पहेलाना कर्मोने अनुसार इन्द्रगोप जीवडाथी मांडीने इन्द्र सुधीना दरेक कर्मीने तटस्थता पूर्वक जे कर्मफळो भोगववा आपेछे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

यं क्रोध काम सहज प्रणयादि भीति
वात्सल्य मोह गुरु गौरव सेव्य भावैः।
सन्चिन् त्य तस्य सदृशीम् तनुम् आपुर् एते
गोविन्दम् आदि पुरुषम् तम् अहम् भजामि ॥५५॥

वेरथी, काम आसक्तिथी, कुदरती मित्रभावथी, भयथी, माबाप तरीकेना स्नेहथी, भ्रांतिथी, अति मानथी, के सहर्ष सेवाथी दोराइने जेनु ध्यान करता ध्यानयोगीओ पोताना ते चिंतनने बंधबेसता आकार नु शरीर मेळवे छे ते आदिपुरुष गोविन्दने हुं भजुं छुं।

श्रियः कान्ताः कान्तः परमपुरूषः कल्प तरवो
द्रुमा भूमिश् चिन्तमणि गणमयी तोयं अमृतं।
कथा गानं नाटयं गमनं आपि वंशी प्रियसखी
चिदानन्दं ज्योतिः परम् अपि तद् आस्वाद्यं अपि च॥
स यत्र क्षीराब्धिः सवति सुराभिभ्यश् च सु महान।
निमेष अर्ध आख्यः वा व्रजति न हि यत्र अपि समयः।
भजे श्वेतद्वीपं तमहं इह गोलोकम् इति यं
विदन्तस् ते सन्तः क्षिति विरल चाराः कतिपये ॥५६॥

जे धाममां लक्ष्मीओनी वहाली सखीओ तेमना विशुद्ध आध्यात्मिक लक्षणथी सर्वोपरि भगवान कृष्णनी तेमना एक मात्र प्रेमी तरीके कामासक्त सेवा करेछे, ज्यां दरेक वृक्ष ईच्छित वस्तुओ आपतुं कल्पवक्ष छे, ज्यां चिन्तामणि मणिओनी जमीन छे, बधुं पाणी अमृत छे, दरेक शब्द गीत छे, दरेक चाल नृत्य छे, वांसळी ए लाडकी दासी छे, तेज आध्यात्मिक परमानन्दथी भरपूर छे अने बधी सर्वोत्तम दिव्य वस्तुओ माणवालायक अने स्वादिष्ट छे, ज्यां अगणीत गायो हंमेश दूधना ईन्द्रियातीत समुद्रो वछोडे छे, ज्यां ईन्द्रियातीत समयनु सनातन अस्तित्व छे के जे हंमेश भूत अने भविष्य वगरनो वर्तमान काळ ज छे अने तेथी ते एक अडधी क्षण माटे पण पसार थई जतो नथी ते धामने हुं भजुं छुं के जे श्वेतदिप तरीके जाणीतो छे। ते धामने आ जगतमां आत्म साक्षात्कार पामेला बहु थोडा ज महात्माओ गोलोकना नामथी जाणे छे।

--xxx--